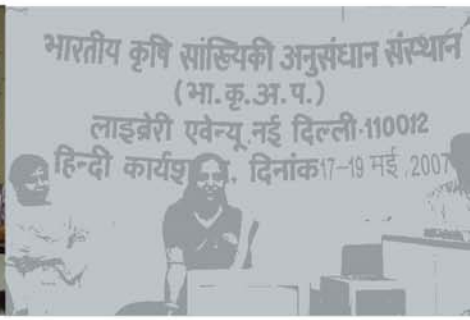

18

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में राजभाषा के बढ़ते चरण

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में वर्ष-दर-वर्ष हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में अभिवृद्धि हो रही है । राजभाषा नीति को संस्थान में सुचारु रूप से कार्यान्वित किया जा रहा है । राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्यों को इस संस्थान में लगभग पूरा कर लिया गया है । संस्थान द्वारा समस्त प्रशासनिक कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में और यथाआवश्यक द्विभाषी हो रहा है । वैज्ञानिक कार्यों में भी हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाता है । न केवल मात्रात्मक रूप में बल्कि हिन्दी के प्रयोग में गुणवत्ता की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है ।

प्रतिवेदनाधीन अवधि में संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गयीं । इन बैठकों में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुपालन को सुनिश्चित करने, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम की विभिन्न मदों, हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन, कार्यशालाओं के नियमित आयोजन, चेतनामास के आयोजन इत्यादि पर विस्तार से चर्चा हुई । बैठकों का आयोजन 16 अप्रैल 2007, 20 जुलाई 2007, 23 अक्टूबर 2007 तथा 17 जनवरी 2008 को हुआ ।

इस वर्ष में संस्थान के कर्मियों के लिए चार कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं । पहली कार्यशाला 17 से 19 मई 2007 के दौरान "हिन्दी टंकण" पर आयोजित की गयी । इस कार्यशाला में संस्थान के उन कर्मियों ने सहभागिता की जो हिन्दी टंकण नहीं जानते थे परन्तु हिन्दी टंकण जानने के इच्छुक थे । इस कार्यशाला में राजभाषा विभाग, हिन्दी शिक्षण योजना, नई दिल्ली की सहायक निदेशिका (टंकण एवं आशुलिपि), सुश्री आशा ने 17 एवं 19 मई 2007 को तथा राजभाषा विभाग, हिन्दी शिक्षण योजना, नई दिल्ली की ही सहायक निदेशिका (टंकण एवं आशुलिपि), श्रीमती ऊषा शर्मा ने 18 मई 2007 को कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण दिया । द्वितीय कार्यशाला 29 तथा 30 अगस्त 2007 को "हिन्दी वर्तनी एवं व्याकरण" विषय पर आयोजित की गयी । इस कार्यशाला में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा की हिन्दी लोक

शब्दकोष परियोजना के प्रधान सम्पादक, श्री अरविन्द कुमार तथा संस्थान के पूर्वानुमान तकनीक प्रभाग की अध्यक्षा एवं तत्कालीन राजभाषा प्रभारी, डॉ. रंजना अग्रवाल ने "हिन्दी वर्तनी एवं व्याकरण" विषय पर व्याख्यान दिये । तृतीय कार्यशाला 14 तथा 15 दिसम्बर 2007 को संस्थान के वैज्ञानिक एवं तकनीकी वर्ग के लिए "वैज्ञानिक/तकनीकी सामग्री का हिन्दी अनुवाद" विषय पर आयोजित की गयी । इस कार्यशाला में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के निदेशक, डॉ. दंगल टी. झाल्टे ने "राजभाषा हिन्दी और अनुवाद" विषय पर तथा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के हिन्दी विभाग के रीडर, डॉ. राजीव लोचन नाथ शुक्ला ने "प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक कार्यों में अनुवाद की समस्याएँ" विषय पर व्याख्यान

हिन्दी कार्यशाला का एक दृश्य

दिये । चतुर्थ कार्यशाला 28 तथा 29 फरवरी 2008 को "राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन" विषय पर आयोजित की गयी जिसमें कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग, नार्थ ब्लॉक, नई दिल्ली के उप-निदेशक (राजभाषा), श्री प्रेम सिंह तथा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के हिन्दी विभाग के रीडर, डॉ. राजीव लोचन नाथ शुक्ला ने "राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन" विषय पर व्याख्यान दिये ।

संस्थान में कार्यरत सभी हिन्दीतर भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिन्दी ज्ञान सम्बन्धी प्रशिक्षण पूरा किया जा चुका है । आज तक की स्थिति के अनुसार, संस्थान में अब कोई ऐसा हिन्दीतर भाषी अधिकारी/कर्मचारी शेष नहीं रह गया है जिसे हिन्दी ज्ञान सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाना शेष हो । इसके अतिरिक्त, "हिन्दी शिक्षण योजना" के अन्तर्गत संस्थान में हिन्दी आशुलिपि के प्रशिक्षण का लक्ष्य भी संस्थान द्वारा पूरा कर लिया गया है तथा केवल हाल ही में नियुक्त दो कनिष्ठ लिपिकों को हिन्दी टंकण के प्रशिक्षण हेतु भेजा गया है ।

संस्थान में वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्यों को पूरा करते हुए संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपनी ओर से लिखे जाने वाले सभी पत्र तो हिन्दी अथवा द्विभाषी रूप में लिखे ही गये साथ ही, "क", "ख" तथा "ग" क्षेत्रों से अँग्रेज़ी में प्राप्त पत्रों के उत्तर भी शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा द्विभाषी रूप में दिये गये । "क" तथा "ख" क्षेत्रों की राज्य सरकारों एवं उनके कार्यालयों और ग़ैर-सरकारी व्यक्तियों के साथ पत्राचार शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा अपेक्षानुसार द्विभाषी रूप में ही किया गया । संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिक प्रभागों तथा प्रशासनिक अनुभागों द्वारा आयोजित की जाने वाली बैठकों की कार्यसूची तथा कार्यवृत्त शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा द्विभाषी रूप में जारी किये गये ।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अपना कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में करने के लिए आठ अनुभागों को विनिर्दिष्ट करने का लक्ष्य संस्थान द्वारा पहले ही प्राप्त कर लिया गया है । हमारे संस्थान में अपना कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में करने के लिए दस अनुभाग पहले से ही विनिर्दिष्ट हैं ।

प्रशासनिक कार्य के अतिरिक्त संस्थान में वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी हिन्दी के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता है । वैज्ञानिकों ने अपनी परियोजना रिपोर्टों के सारांश द्विभाषी रूप में दिये, विद्यार्थियों द्वारा अपने शोध-प्रबन्धों में द्विभाषी रूप में सारांश प्रस्तुत किये गये, सेमिनार हिन्दी में दिये गये । वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कर्मियों द्वारा हिन्दी में शोध-पत्र प्रकाशित किये गये । इसके अतिरिक्त, संस्थान से बाहर आयोजित सम्मेलनों में भी संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा हिन्दी में शोध-पत्र/पोस्टर प्रस्तुत किये गये । संस्थान द्वारा किये जाने वाले सर्वेक्षणों की प्रश्नावलियाँ/प्रपत्र/निर्देश द्विभाषी रूप में तैयार किये गये।

संस्थान की वेबसाइट द्विभाषी है जिसको समय-समय पर अद्यतन किया गया । इस वर्ष संस्थान की वेबसाइट पर उपलब्ध "हिन्दी-सेवा लिंक" में द्विभाषी टिप्पणियों के साथ-साथ वैज्ञानिक तथा प्रशासनिक शब्दावली में सामग्री जोड़ी गयी ।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी तथा परिचालित विभिन्न नकद पुरस्कार योजनाएँ संस्थान में लागू हैं । संस्थान के कर्मियों ने इन योजनाओं में भाग लिया ।

संस्थान के पूर्वानुमान तकनीक प्रभाग की अध्यक्षा एवं पूर्व राजभाषा प्रभारी, डॉ. रंजना अग्रवाल द्वारा भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की "हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु वर्ष 2006-07 के लिए इन्दिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार" योजना के अन्तर्गत "विज्ञान में ताक-झाँक" नामक वैज्ञानिक पुस्तक की पाण्डुलिपि प्रस्तुत की गयी ।

संस्थान में सितम्बर 2007 के दौरान हिन्दी चेतनामास का आयोजन किया गया । इस दौरान आयोजित प्रतियोगिताएँ/कार्यक्रम इस प्रकार हैं : काव्य-पाठ, शिक्षक दिवस, डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान, प्रभागीय चल-शील्ड, वाद-विवाद, प्रश्न-मंच, हिन्दी आशुलिपि, हिन्दी टंकण, हिन्दी निबन्ध लेखन, हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, वर्तनी एवं शोध-पत्र-पोस्टर-प्रदर्शन प्रतियोगिता । संस्थान में 05 सितम्बर 2007 को शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि, प्रो. मदन गोपाल सरदाना को सम्मानित किया गया । 14 सितम्बर 2007 को हिन्दी दिवस के अवसर पर डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यानमाला का 16वाँ व्याख्यान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (अभियांत्रिकी), डॉ. नवाब अली द्वारा "कुपोषण दूर करने में सोयाबीन का योगदान" विषय पर दिया गया । हिन्दी चेतनामास के समापन समारोह के अवसर पर 01 अक्टूबर 2007 को संस्थान में हो रहे हिन्दी कार्यों तथा चेतनामास के दौरान आयोजित समस्त कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं की एक झलकी प्रस्तुत की गयी तथा समारोह के मुख्य अतिथि, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के अपर सचिव तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सचिव, श्री अनिल कुमार उपाध्याय द्वारा सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया ।

संस्थान की हिन्दी पत्रिका, "सांख्यिकी-विमर्श" के तीसरे अंक का प्रकाशन किया गया । इस अंक में संस्थान के कीर्तिस्तम्भ, इस वर्ष संस्थान द्वारा किये गये अनुसंधानों, राजभाषा से सम्बन्धित कार्यों व अन्य गतिविधियों के संक्षिप्त विवरण के साथ-साथ कम्प्यूटर पर रोचक लेख, सूचना प्रौद्योगिकी एवं जीव विज्ञान में अनुप्रयोग, वर्षा का पूर्वानुमान तथा क्योटो प्रोटोकॉल जैसे सामयिक महत्व के विषयों से सम्बन्धित लेख संग्रहित हैं । संस्थान द्वारा विकसित गेहूँ की फ़सल के लिए प्रबंधन दक्ष तंत्र तथा संस्थान के पुस्तकालय सूचना तंत्र का विवरण भी दिया गया है। डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उपमहानिदेशक (अभियांत्रिकी), डॉ. नवाब अली द्वारा दिया गया व्याख्यान आमंत्रित ज्ञानवर्धक लेख के रूप में पत्रिका में सम्मिलित किया गया है । कृषि सांख्यिकी के क्षेत्र में प्रयोग होने वाले सौ तकनीकी शब्दों का शब्द-शतक हिन्दी व अंग्रेज़ी में दिया गया है ताकि लेखकों को हिन्दी में लेख लिखने में आसानी हो सके ।

INDIAN AGRICULTURAL STATISTICS RESEARCH INSTITUTE